ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-7* August- 2020
Innovation The Research Concept

पारिवारिक वातावरण का किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि में योगदान

Family Environment Contributes to Adolescent Academic Achievement

Paper Submission: 12/08/2020, Date of Acceptance: 23/08/2020, Date of Publication: 25/08/2020

गायत्री कुमारी
सहायक प्राध्यापिका,
डॉ एस.राधाकृष्णन कॉलेज ऑफ एजुकेशन, चिकिसिया चास, झारखण्ड, भारत

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करता है। परिवार को बालक की पहली पाठशाला व जन्मदात्री मां को प्रथम शिक्षिका माना जाताहै। माता पिता का प्यार, सामीप्य, कदम–कदम पर संभाल तथा सही तरीके से पालन–पोषण बच्चोंमें जीवन के प्रति सही दृष्टिकोण व सकारात्मक अभिवृत्ति का विकास करते हैं। परिवारों में जब किशोरों की उपेक्षा की जाती है तब उनमें आत्मविश्वास की कमी हो जाती है जो उनकी शैक्षिक उपलब्धि को निम्न स्तर का बनाता है। यदि माता–पिता अपने बच्चों को परिवार में वैसाअधिकार पूर्ण वातावरण प्रदान कर सकें जहां किशोरों को स्वतंत्र चिंतन के लिए प्रेरित किया जाताहै तो वह वातावरण छात्रों की उपलब्धि में वृद्घि करने वाला होता है, अभिभावकों का उचित निर्देशन किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि को उच्च बनाता है।

The study presented studies the impact of the family environment on adolescents' academic achievement. The family is considered to be the first teacher of the child's first school and the birth mother. Parental love, affection, step by step and proper upbringing develop the right attitude and positive attitude towards life in children. When adolescents are neglected in families, they lack confidence, which makes their educational attainment low. If parents are able to provide their children with an authoritative environment in the family where adolescents are motivated for independent thinking, then that environment increases student achievement, parents 'proper instruction increases adolescents' academic achievement.

मुख्य शब्द : झारखण्ड के किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि, पारिवारिक वातावरण, स्वतंत्र चिंतन एवं अभिभावकों का उचितनिर्देशन शैक्षिक उपलब्धि।
Educational Achievement of Teenagers of Jharkhand, Family Environment, Independent Thinking and Proper Instruction of Parents.

प्रस्तावना

प्रत्येक व्यक्ति के लिए परिवार समाजीकरण का प्रथम संस्थान है। व्यक्ति अपने जीवन में आनेवाले परिस्थितियों का सामना कर सके, इस महान कार्य में परिवार महत्वपूर्ण भूमिका अदा करसकता है। परिवार एक ओर तो संवेगात्मक रूप से परिपक्व, समायोजित, सचरित्र नागरिकों का प्रादुर्भाव करता है तो दूसरी और उनकी शैक्षिक उपलब्धि में महत्वपूर्ण योगदान देता है। परिवारके वातावरण का तथा सदस्यों के आपसी संबंधों का प्रभाव बालक के विकास पर पड़ता है। जिस परिवार में किशोरों को परिवार का एक महत्वपूर्ण सदस्य समझा जाता है उसकी शारीरिक,मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं को पूरा किया जाता है तो उनका समायोजन अच्छा होता हैजिसका प्रभाव उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है। कुछ माता–पिता किशोरों को आवश्यकता सेअधिक सुरक्षा प्रदान करते हैं, उनको स्वतंत्र होकर कार्य नहीं करने देते, उनसे उनकी योग्यता सेअधिक आशा करने लगते हैं, ऐसे वातावरण में रहने वाले बालकों का विकास अच्छा नहीं होता हैवह संवेगात्मक रूप से अपरिपक्व होते हैं। उनमें स्वतंत्रता, चिंतन, निर्णय लेने की योग्यता तथाआत्मविश्वास का नितांत अभाव होता है। इस कारण उनकी शैक्षिक उपलब्धि भी निम्न स्तर कीहोती है। जिन परिवारों में किशोरों की उपेक्षा की जाती है, उनकी शारीरिक तथा मनोवैज्ञानिकआवश्यकताओं पर ध्यान

नहीं दिया जाता है, माता–पिता उनके किसी कार्य में रुचि नहीं लेते,यदि बालक माता–पिता के पास अपनी कोई समस्या लेकर जाता है तो उसे डांट कर भगा दियाजाता है। ऐसे बालकों के व्यक्तित्व का विकास अच्छा नहीं होता उनमें हीनता और उपेक्षा कीभावनाएं उत्पन्न होती है, वह अपने को असुरक्षित समझता है। हीन भावना ग्रंथि से ग्रस्त बालकविद्यालय में एकाग्रता से अध्ययन नहीं करता। अध्यापक के प्रति उनके मन में उचितदृष्टिकोण नहीं होता, अपनी समस्याओं को प्रकट करने में हिचकता है, परिणामस्वरूप उनकीशैक्षिक उपलब्धि भी निम्न स्तर की होती है। बालक की शैक्षिक उपलब्धि में पारिवारिक जीवनके महत्व को किसी भी दृष्टि से कम नहीं समझना चाहिए।

यदि परिवार में किशोरों को महत्वपूर्ण सदस्य समझा जाता है, उसकी शारीरिक तथा मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं को यथासंभव पूर्ण करने की चेष्टा की जाती है ऐसी स्थिति में बालक में सुरक्षा, आत्मविश्वास का विकास होता है। परिवार के वातावरण का प्रभाव बालक की संवेगात्मक परिपक्वता पर भी पड़ता है। संवेगात्मक रूप से अपरिपक्व बालक में संवेगात्मक अस्थिरता पाई जाती है। ऐसे बालक समस्या का समाधान करने में असमर्थ रहते हैं, बहुत जल्दी क्रोधित हो जाते है। इस कारण कक्षा में समायोजन नहीं कर पाते। समायोजन अच्छा न होने के कारण उनका मन पढ़ाई में नहीं लगता और वह कक्षा में पिछड़ जाते है। संवेगात्मक दमन के कारण बालक में हीनता की भावना का विकास होने लगता है। अस्वस्थ पारिवारिक संबंध बालक में संवेगात्मक अपरिपक्वता का शैक्षिक उपलब्धि को भी प्रभावित करता है। संवेगात्मक रूप से अपरिपक्व बालक में संवेगात्मक अस्थिरता, संवेगात्मक दमन, सामाजिक कुसमायोजन, व्यक्तित्व विघटन और नेतृत्व हीनता पाई जाती है। ऐसे बालकों मे अपनी समस्याओं का समाधान करने की योग्यता का अभाव होता है परिणामस्वरूप उनमें भावना ग्रंथियों और कुंठाओं का जन्म होता है, वह अपने विचारों को दूसरों के सामने प्रकट करने में संकोच करते हैं जिसका प्रभाव उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है।

पारिवारिक संबंध व्यक्ति में ऐसी अभिवृत्ति दृ ष्टिकोण तथा अंतर्दृष्टि का प्रादुर्भाव कर देते हैं जिससे बहुत सी आवश्यकताओं की पूर्ति व्यक्ति हंसते–हंसते कर लेता है तथा अन्य आवश्यकताएं भी विकट रूप धारण करने से पूर्व ही विलीन हो जाती है। अस्वस्थ पारिवारिक संबंध बालक में असुरक्षा, हीनता की भावना, आत्मविश्वास की कमी का विकास करते हैं। परिणामस्वरूप शैक्षिक उपलब्धि का स्तर कम हो जाता है। यदि हम बालक को उसकी योग्यता के अनुसार अच्छी शिक्षा प्रदान करना चाहते हैं, उसको उचित निर्देशन देना चाहते हैं तथा वह अपने सामर्थ्य के अनुसार अधिकतम उन्नति कर सकें तो पहले उसके पारिवारिक जीवन को समझना होगा। पारिवारिक संबंधों को मधुर बनाकर तथा संवेगात्मक परिपक्वता का विकास करके बालक की शैक्षिक उपलब्धि का स्तर उच्च किया जा सकता है।

निष्कर्ष

किशोरों की शिक्षा के लिए पारिवारिक वातावरण महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है तथा उपलब्धिको प्रभावित करती है। पारिवारिक वातावरण के बेहतर परिवेश और माता–पिता का ध्यान, प्यारएवं अकादमिक मदद बालक की शिक्षा को बेहतरी के रास्ते पर ले जा सकती है, स्वस्थ पारिवारिक वातावरण से शैक्षिक उपलब्धि में विकास होता है। अतः अभिभावकों का अपने बच्चों पर ध्यान नितांत आवश्यक है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *एम. रानी दृ लता. (2015).जर्नल ऑफ द इंडियन अकादमी ऑफ एप्लाइड साइकोलॉजी 31(2),18–23.*
2. *चावला,एन.अनीता.(2012). द रेलशनशिप बिटवीन फैमिली एनवायरनमेंट एंड अकादमिक अचीवमेंट. इंडियन ड्रीम रिसर्च बर्नल(12)*
3. *शर्मा, मनिका.,खातून, ताहिरा.(2011) फैमिली वेरिएबल एस अ प्रेडिक्टर ऑफ स्टूडेंट्स अचीवमेंट इन साइंस. जर्नल ऑफ कम्युनिटी गाइडेंस एंड रिसर्च 28(1), 28–36.*
4. *देवी, एस., मयूरी, के. (2008). द इफेक्ट ऑफ फैमिली एंड स्कूल ऑन द अचीवमेंट ऑफ रेसिडेंटियल स्कूल चिल्ड्रन.जर्नल ऑफ कम्युनिटी गाइडेंस एंड रिसर्च 20(2),139–148.*
5. *दासगुप्ता, मनीषा– सान्याल, निलांजना .(2008). फैमिली द चीफ कैटेलिस्ट इन प्रमोटिंग चिल्ड्रंस इमोशनल वेलबिंग्यू अ रिव्यु.इंडियन जर्नल ऑफ कम्युनिटी साइकोलॉजी4(1), 48–63.*
6. *जुयाल, एस.एल.,गौर, वी. (2007).फैमिली स्ट्रक्चर एंड जेंडर ऐज कोरिलेट्स ऑफ भैरिटल एडजस्टमेंट एंड मेंटल हेल्थ ऑफ द मैरिड कपल.बेहवियरल साइंटिस्ट, 8रू93–100.*
7. *गौर,वी. गुप्ता, एन.(2004).द इफेक्ट ऑफ सेट ऑन पर्सीवड होम एनवायरनमेंट, देव शक्ति, 1रू41–49.*
8. *शर्मा, एस. निधि. (2002). ए स्टडी ऑफ द इफेक्ट ऑफ पेरेंटल इन्वूल्वमेंट एंड एस्पिरेशन ऑन अकादमिक अचीवमेंट ऑफ 2 स्टूडेंट्स. डिपार्टमेंट ऑफ एजुकेशन, पंजाबी यूनिवर्सिटी*
9. *मार्टिन, ए.जे., मार्श, एच.,देवस, आर.एल. (2001). सेल्फ–हैंडीकैपिंग एंड डिफेंसिव पेसिमिस्म रू एक्सप्लोरिंग ए मॉडल ऑफ प्रेडिक्टर्स एंड आउटकॉम्स फ्रॉम ए सेल्फ प्रोटेक्शन पर्सपेक्टिव, जर्नल ऑफ एजुकेशनल साइकोलॉजी, 93,87–102.*
10. *Sharma, S (2017)- Social networking addiction and academic self&concept] P: ISSN No.-: 2394-0344 E: ISSN NO-: 2455&0817 RNI No- UPBIL/2016/67980 VOL-2 ISSUE-1 Remarking An Analisation*
11. *Sharma, S (2018)- Developmental perspectives on identity its nature and formation, P: ISSN NO-: 2321-290X E: ISSN No-: 2349-980X RNI: UPBIL/2013 /55327 Vol-6 ISSUe-4 (Part&1) Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika-*
12. *Sharma] S (2019)- Role of education and socio-cultural change of girls of Haryana, P: ISSN No-: 2321-290X, E: ISSN No-: 2349-980X RNI: UPBIL/2013/55327 Volume 6 Issue Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika-*